Gyanvividha [A Peer Reviewed and Refereed Journal] March 2024 : Year-1, Vol-2 : PP-19-21

ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
March 2024 : 1(2)19-21
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

डॉ. कृष्ण कुमार
सहायक आचार्य, हिन्दी
गुरु काशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो (बठिंडा) पंजाब

Corresponding Author :

डॉ. कृष्ण कुमार
सहायक आचार्य, हिन्दी
गुरु काशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो (बठिंडा) पंजाब

जगदीश चंद्र के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

सारांशः

समाज शब्द का दायरा बहुत ही व्यापक है, जिसमें समूचा मानव जगत समाहित हो जाता है। साहित्य जगत में समाज के क्रिया-कलापों के विवेचन-विश्लेषण हेतु अनेक प्रकार की साहित्यिक पद्धतियां प्रचलित होती जा रही है। विविधताओं के बढ़ने के कारण साहित्य के क्षेत्र में समाजशास्त्रीय साहित्यलोचन की एक अनिवार्य पद्धति हमारे सामने आई। साहित्य और समाज के संबंधों की व्याख्या का इस पद्धति के अंतर्गत बल दिया गया है। मनुष्य की सामाजिकता की पहचान के समाजशास्त्र के अंतर्गत अनेक रास्ते हैं। उन्हीं रास्तों में से एक रास्ता साहित्य से होकर जाता है। साहित्य के अंतर्गत अनेक विधाएं आती है। उनमें से उपन्यास की बात करें तो उपन्यास में अन्य विधाओं की अपेक्षा सामाजिकता की झलक अधिक स्पष्ट नजर आती है। दूसरी तरफ देखें तो अपने समाज एवं समय का निरीक्षण, परीक्षण एवं अन्वेषण की आधुनिक दृष्टि का एक उचित रूप उपन्यास में मिलता है।

मूल शब्दः गांव, समाज, साहित्य, रास्ता

मूल आलेख: लेखक के उपन्यास साहित्य में व्याप्त समाज को दो प्रमुख शाखाओं (ग्रामीण समाज एवं शहरी समाज) के अंतर्गत विश्लेषण किया गया है। समाज के दो प्रमुख हिस्से गांव एवं शहर है। यद्यपि दोनों ही समाज के हिस्से है, परंतु दोनों में सांस्कृतिक विभिन्नता का होना सहज बात है। गांव एवं शहर दोनों अपनी-अपनी

संस्कृति एवं परिवेश में चलते हैं। जिस कारण दोनों में विभिन्नता देखी जा सकती है। दोनों शाखाओं के अंतर्गत औपन्यासिक साहित्य में विभाजित समाज की उभरती छवि को दर्शाया गया है। आधुनिक समाजशास्त्र की ग्रामीण समाजशास्त्र एक शाखा है। जिसके तहत ग्रामीण जीवन का अध्ययन किया जाता है। शहर की अपेक्षा ग्रामीण जनजीवन में बहुत अंतर पाया जाता है। ग्रामीण संस्कृति में व्याप्त वर्ग-भेद, ऋणग्रस्त, धर्म एवं संस्कार, आवास एवं बस्ती, जाति-भेद, ग्रामीण त्यौहार आदि आयामों को दर्शाते हुए जगदीशचंद्र के उपन्यासों का विश्लेषण किया गया है। गांव की छवि शहरी जनजीवन से अलग है। जिसका अध्ययन समाजशास्त्र के अंतर्गत किया गया है।

'कभी न छोड़ें खेत', 'धरती धन न अपना', 'मुट्ठी भर कांकर', आदि उपन्यासों के माध्यम से गांव के जनजीवन का वास्तविक चित्र प्रस्तुत किया गया है। 'कभी न छोड़ें खेत' उपन्यास ग्रामीण आपसी विरोधावास का दस्तावेज है, जिसमें ग्रामीण परिवेश के तहत धार्मिक अड्डों का विवरण एवं साहूकारों की कूटनीतियों का विवरण पूर्ण रूप से अभिव्यक्त हुआ है। भारतीय ग्रामीण क्षेत्र पिछड़े हुए दिखाई देते हैं, किंतु 'मुट्ठी भर कांकर' उपन्यास बदलते ग्रामीण परिवेश एवं मूल्यों को अभिव्यक्त करता हुआ दिखाई देता है। गांव में बहुत से बदलते हुए मूल्यों का हनन, आधुनिक परिवेश का प्रभाव एवं धोखेबाजी, बदलती हुई जीवन शैली के आधार पर उपन्यासकार ने समाज में आ रहे तेजी से बदलाव की और संकेत करने की कोशिश की है।

नगरीय संस्कृति में धन प्राप्ति हेतु लोग सभ्यता एवं संस्कृति का ह्रास करते नजर आते हैं। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में गांव में जाति-पाति, बेरोजगारी, आवास, धर्म-संस्कार का यथार्थ रूप दिखाया गया है। ग्रामीण लोग अपनी पेट की भूख को शांत करने के लिए हर कार्य करने के लिए तैयार है। उनकी सभ्यता और संस्कृति रोटी, कपड़ा और मकान आदि आवश्यकताओं के आसपास घूमती हुई दिखाई देती है। दूसरी और नगरीय समाज में लोग जाति-पाति के धरातल से ऊपर उठे हुए दिखाई दे रहे हैं। परंतु नगरीय जनजीवन ग्रामीण जनजीवन से भी ज्यादा भयंकर परिस्थितियों में से गुजरा हुआ नजर आता है। नगरी संस्कृत में धन प्राप्ति हेतु लोग सभ्यता एवं संस्कृति का ह्रास करते हुए नजर आते हैं। उपन्यास की पात्र प्रीतों भूख के कारण अपनी लाचारी बयां करती हुई रहती है, "आग लगे, मोहल्ले को। मेरे बच्चे भूख से बिलख रहे हैं"[1] दूसरी ओर फतू बावे के घर पर भी खाने के लिए कुछ नहीं एवं कमजोरी के कारण उसकी आवाज नहीं निकल पा रही।

मजदूरी का समय निर्धारित ने होने के कारण ग्रामीणों की दशा और भी मुश्किल हो जाती है। वे सभी एक-दूसरे को शक की नजर से देखते रहते हैं। चौधरियों के घरों में भी काम नहीं करने जाते, तो स्वयं को विवश समझने लगते हैं। काली गांव के लोगों को बोलता है, "अगर मैं कहूं कि हमें चौधरियों के पास नहीं जाना चाहिए, तो बहुत से लोगों को मेरी यह बात बुरी लगेगी। मैं भी नहीं चाहता, कि हम चौधरियों के पांव पकड़कर माफी मांगे। गांव में पहले ही हमारी कोई इज्जत नहीं है। ऐसा करने से उम्र भर उनकी बातें सुननी पड़ेगी। हम अपना हक भी नहीं मांग सकेंगे। लोगों के फांके काटते और बच्चों को भूख से भी बिलखते देखता हूं तो जी चाहता है, कि अभी जाकर माफी मांग ले"[2]

जिस कारण शहरी लोग घुटन, निराशा, चिंता, अकेलापन एवं आर्थिक लिप्सा के कारण दिग्भ्रमित होती युवा शक्ति के आधार पर जगदीशचंद्र के उपन्यासों को कसौटी पर कसने की कोशिश की गई है। मनुष्य के जनजीवन को आधुनिक परिवेश प्रभावित करता हुआ स्पष्टत: नजर आता है। जगदीश चंद्र के उपन्यास 'नरकुंड में बास' घास गोदान एवं यादों के पहाड़ में नगरी जनजीवन एवं उससे निकलने वाले परिमाणों को रेखांकित किया गया है। वर्तमान समाज में व्यावसायिक भागदौड मुख्य समस्या है, जिससे युवा पीढ़ी हर प्रकार से अपनाने के लिए प्रयासरत रहती है।

'नरकुंड में बास' उपन्यास का पात्र काली धन की आड में गांव से भाग जाता है, किंतु शहर में आकर खुद को जकड़ा हुआ अनुभव करता है। वह खाल साफ करने वाले कारखाने में काम करने के लिए विवश है। लेखक के उपन्यास 'यादों के पहाड़' में दिनेश

आधुनिक सभ्यता एवं संस्कृति के चलते विवाह नामक संस्था का मजाक करता हुआ दिखाई देता है। दूसरी ओर अपने जीवन को और अधिक बेहतर बनाने के लिए जीवन की दलदल में धंसता हुआ चला जाता है। वह स्वयं के जीवन को बोझ समझने लगता है। नगरीय सभ्यता से प्रभावित युवा वर्ग की व्यवसायिक भूख घुटन, निराशा की और ले जाती प्रतीत होती है। "यह मण्डी उसे बहुत ही विचित्र लगती है। इसका अपना अलग ही संसार था। जहां आदमी पलों में लखपति बनकर अतिशबाजी की तरह आकाश में जा भगवान की तरह अदृश्य हो जाता है या फिर पल-भर में ही लखपति से कंगाल हो अपने ही पसीने में नहाता हुआ गश खाता गरीबी और गुमनामी के पाताल में खो जाता है।"[3]

जगदीश चंद्र के उपन्यास 'जमीन तो अपनी थी' में कुलतार सिंह शहर में रहकर ऐशों- आराम का जीवन व्यतीत करता है। वह ग्रामीण भोले-भाले लोगों को ठगने में मौका ढूंढता रहता है। वह खाली कागजों पर अंगूठा लगवाकर उन लोगों का सब कुछ हड़पना चाहता है। उसे गांव में रह रहे संगे-संबंधियों से धोखाधड़ी करने पर भी कोई मलाल नहीं है। जब इस बारे में उसके संगे-संबंधियों को पता चलता है तो वह उससे मिलने से इनकार कर देता है। धन-दौलत की दौड़ में वह अपनों से ही छलकपट करता है, लेकिन वह अपना गुनाह कबूल नहीं करता एवं कहता है, "सारा दोष आप लोगों का है। आपने अपने हाथों से सब काम करवाया है। दुनिया की सबसे बडी अदालत भी जमीनों के इंतकाल की कानूनी हैसियत दें, इनकार नहीं कर सकती"[4]

ग्रामीण लोग हताश होकर घरों को जाने के लिए विवश हो जाते हैं। ग्रामीण लोग कुलतार पर विश्वास करते हैं, लेकिन वह उनके साथ विश्वासघात करता है। वह अपना उल्लू सीधा करता है। इसी शहरीकरण एवं आधुनिकता की आड़ में सभी मूल्य का ह्रास होता जा रहा है। लेखक द्वारा दिखाई गई यह समस्या भंयकर रूप धारण करती जा रही है।

'घास गोदाम' आर्थिक अलगाव पर आधारित है। उपन्यास का पात्र प्रह्लाद सिंह अपनी सारी संपत्ति बेच देता है। अपना सारा धन दिखावे के चक्कर में जुआ खेलने में लुटा देता है। वह कहता है, "जुए जैसा खेल नहीं। यदि हार न हो, तो चोरी जैसा कोई धन नहीं, यदि सरकार न हो तो....."[5] प्रह्लाद सिंह अपनी आकांक्षाओं के चलते गलत रास्ता पकड़ लेता है वह जुए द्वारा धनवान बनना चाहता लेकिन जुआ उसके गले की का फंदा बन जाता है। वह नशे की हालत में जुए में सब कुछ हार जाता है। वह जुए में हारी हुई घड़ी वापस मांगता है, तो रेशम सिंह घड़ी देने से मना कर देता है। उन दोनों में लड़ाई हो जाती है एवं प्रह्लाद उसे मार देता है। "उसने पहले हमला उसके शरीर के दाई ओर किया.....प्रह्लाद सिंह ने उसे दोनों हाथों से पकड़ ऊपर उठा लिया और पूरे जोर से पत्थरों के ढेर पर फेंक दिया"[6]

निष्कर्ष: जगदीश चंद्र के उपन्यासों में सभी सामाजिक तथ्य एवं समस्याएं विद्यमान है। जिसमें वर्तमान जागरूक समाजशास्त्रीय की रुचि हो सकती है। उनके उपन्यासों में स्वतंत्रता के पश्चात के समाज को लिया गया है, किंतु वर्तमान संदर्भ में देखा जाए तो स्थितियां परिवर्तित हो रही है, लेकिन कहीं-कहीं यह स्थितियां वर्तमान समाज में भी दिखाई देती है। इसलिए इसके अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता।

संदर्भ सूचीः

1. जगदीश चंद्र 'धरती धन्य अपना', पृष्ठ 245
2. वही, 'धरती धन न अपना', पृष्ठ 254
3. वही, 'नरकुंड में बास', पृष्ठ 352
4. वही, 'जमीन तो अपनी थी', पृष्ठ 740
5. वही, 'घास गोदाम', पृष्ठ 560
6. वही, 'घास गोदाम', पृष्ठ 616